अध्याय 6

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

(क) प्रारंभिक तैयारी– संगठन :–

पिछले अध्याय में आपने पढ़ा है कि 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को कुचलने का पूरा प्रयास अँग्रेजी शासन ने किया। भारत के इतिहास में इस आंदोलन के पश्चात् नए युग की शुरुआत हुई। 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन से जनता को एहसास हुआ कि देश की आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ देश के लोगों को एक दूसरे के समीप ला रही हैं। वे यह भी जानते थे कि लोगों को जागरूक करना होगा। उनमें राजनीतिक चेतना पैदा करनी पड़ेगी तभी भारतीय राष्ट्र का लक्ष्य पाया जा सकता है। इसलिए यह जरूरी है कि लोगों में राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा दिया जाए।

आप यह तो जानते ही हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मूलतः विदेशी आधिपत्य के विरुद्ध एक संघर्ष था। ब्रिटिश शासन के अत्याचारों से उत्पन्न परिस्थितियों ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावना विकसित करने में सहायता दी। वे परिस्थितियाँ निम्नलिखित थीं–

1. लोगों में जातीय घृणा, सामाजिक कुरीतियों एवं असमानता को दूर करने हेतु प्रयास।
2. समूचे देश का राजनीतिक रूप से एकीकरण हुआ।
3. डाक तथा संचार व्यवस्था प्रारंभ करना।
4. अँग्रेजी भाषा का प्रचार–प्रसार करना।
5. अँग्रेजों के पक्षपात पूर्ण आर्थिक नीति और शोषण के कारण भी देश में राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

राष्ट्रीय एकता की भावना, देश–प्रेम, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक परम्पराओं पर अभिमान की भावना को सामूहिक रूप से राष्ट्रवाद कहा जाता है।

अँग्रेजों ने अँग्रेजी भाषा का प्रचार प्रसार क्यों किया ?

आपने यह पढ़ा है कि 18वीं सदी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हुई। अँग्रेज व्यापारी विश्व भर के कई देशों में अपना माल बेचते थे। उन्हें अपने कारखानों के लिए सस्ते, कच्चे माल तथा तैयार माल के लिए बाजार चाहिए था। इसलिए भारत की कृषि, उद्योग, व्यापार आदि की नीति अँग्रेजी अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए ही बनाई गई। अतः उन्होंने भारत का हर तरह से आर्थिक शोषण किया। इस नीति का हमारे देश के नेताओं ने डटकर विरोध किया। इसी विरोध की भावना से उत्पन्न विचार को आर्थिक राष्ट्रवाद भी कहा गया। भारतीयों को पाश्चात्य साहित्य एवं दुनिया के अन्य भागों की घटनाओं के बारे में जानकारी मिली। इससे उनमें राजनीतिक जागरूकता आई। अब भारतीय समझने लगे कि भारत के पिछड़ेपन के लिए ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियाँ ही जिम्मेदार हैं, जिनके कारण किसान, शिल्पकार और कारीगर बर्बाद हो गए। उस समय से भारतीय समाज में शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय हुआ जिनमें वकील, शिक्षक, सरकारी

कर्मचारी, व्यापारी आदि शामिल थे। यह समाज आधुनिक शिक्षा से प्रभावित और जागरूक था। इसने संवैधानिकता, लोकतंत्र जैसे आधुनिक विचारों को आत्मसात किया और उदार लोकतांत्रिक विचारों को स्वीकार किया। ब्रिटिश शासकों की नस्लवाद की भावना तथा प्रशासन में भारतीयों को न्यूनतम वेतन दिए जाने से उनके मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ। उन्होंने जातीय भेदभाव के विरुद्ध भारतीयों में स्वाभिमान की भावना जगाई, इससे उनमें राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ।

भारतीयों की राजनीतिक सभाएँ प्रारंभ में कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास जैसे प्रांतीय नगरों में हुईं। 1851 में कलकत्ता में ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना हुई। 1852 में मुंबई एसोसिएशन तथा इसी वर्ष मद्रास नेटिव एसोसिएशन का गठन किया गया।

इन संगठनों की प्रमुख माँगे थीं– सरकार में भारतीयों की भागीदारी, करों में कमी की माँग तथा भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करना।

इन संगठनों में प्रायः शिक्षित तथा उच्च वर्ग के लोग थे। बाद में ऐसे कई संगठन बने जिनमें जन सामान्य के लोग भी सदस्य बने। ऐसे संगठनों में 1870 में पूना सार्वजनिक सभा, 1884 में मद्रास महाजन सभा और 1885 में बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन प्रमुख थे। छत्तीसगढ़ में भी इसी तरह कुछ संगठनों के विकास में राजनीतिक जागृति दिखाई पड़ने लगी थी।

ये नए संगठन पहले की अपेक्षा अधिक प्रखर थे। ये अँग्रेजों द्वारा भारतीयों से किये जा रहे भेदभाव एवं शोषण के विरोध में सभाएँ करते थे। इनकी माँगे सम्पूर्ण भारत के लिए होती थी।

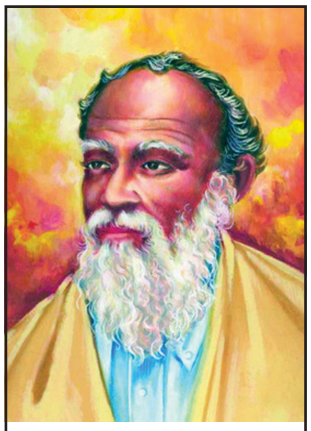
सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी

सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी ने 1853 में कलकत्ता में आयोजित इंडियन एसोसिएशन की बैठक में देश के सभी भागों के लोगों को आमंत्रित किया। यह प्रथम अखिल भारतीय प्रयास था।

कालान्तर में एक अन्य अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया गया, जिसका प्रथम अधिवेशन 28 दिसम्बर 1885 को मुंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में आरंभ हुआ। देश के विभिन्न भागों से 72 प्रतिनिधि इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। व्योमेशचंद्र बेनर्जी इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे। इसी अधिवेशन में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना हुई।

उन दिनों इन संगठनों के मुख्य उद्देश्य थे–

(1) भारत के विभिन्न भागों में रहनेवाले लोगों को संगठित करना।
(2) धर्म–जाति आदि के भेद से परे एकता की भावना उत्पन्न करना।
(3) एक दूसरे की समस्याओं को जानना।
(4) राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक उपायों पर विचारविमर्श करना।
(5) स्वतंत्रता, समानता तथा स्वराज्य में आस्था व्यक्त करना।

1876 में भैरमगढ़, बस्तर में विद्रोह हुआ था।

कॉंग्रेस सम्मेलनों में हो रही चर्चाओं से सरकारी अधिकारी चिंतित होने लगे क्योंकि शासन के बारे में जो कुछ कहा जा रहा था वह सच था। सरकार इसका खंडन भी नहीं कर सकती थी।

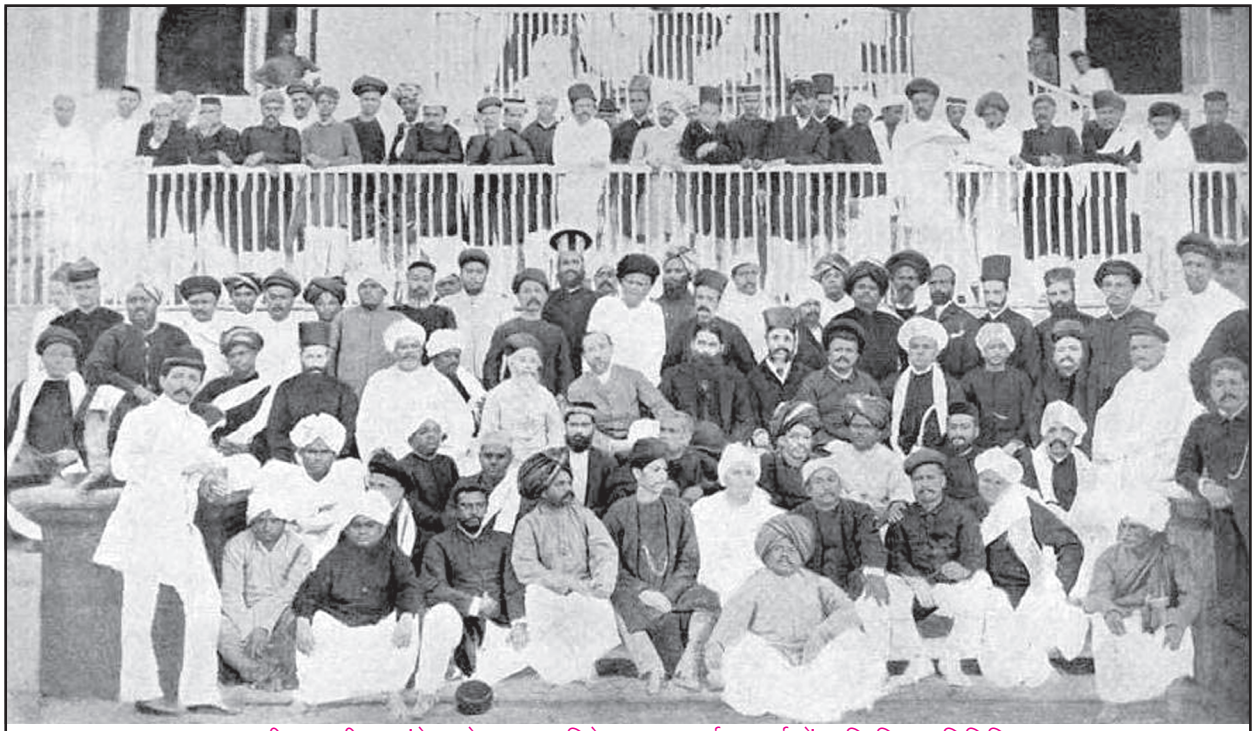

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन 1885 ई. मुम्बई में सम्मिलित प्रतिनिधिगण

कॉंग्रेस को लोकप्रिय न होने देने तथा भारतीयों की सदस्यता को रोकने के लिए सरकार ने कमर कस ली थी। उन दिनों ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी।

कॉंग्रेस के प्रारंभिक नेता नरम विचारों वाले थे। उन्होंने अँग्रेजों का विरोध किए बिना देश की राजनीतिक, आर्थिक प्रगति का प्रयास किया। अपनी माँगों को शासन के समक्ष रखकर देश की समस्या का हल निकालने का प्रयत्न किया। ब्रिटिश शासन ने अधिवेशनों में रुकावट पैदा करना शुरू कर दिया।

इन सब विरोधों का सामना करते हुए राष्ट्रीय कॉंग्रेस अपना कार्य सुचारु रूप से करती रही देश प्रेम की भावना से प्रेरित होकर बड़ी संख्या में युवा वर्ग राष्ट्रीय कॉंग्रेस में सम्मिलित होने लगे। महिलाएँ भी अधिवेशनों में भाग लेने लगीं। छत्तीसगढ़ में भी राष्ट्रभक्त युवकों की कमी नहीं थी। यहाँ के जागरूक नवयुवकों ने जन–जन में देशप्रेम की भावना जगाने का प्रयास किया। इनमें पं.माधव राव सप्रे का नाम प्रमुख है, इन्होंने 1900 में *'छत्तीसगढ़ मित्र'* नामक समाचार पत्र तथा 1906 में *'हिन्दी–केसरी'* के नाम से साप्ताहिक समाचार पत्र निकालकर लोगों में देशप्रेम की भावना को विकसित किया।

(ख) स्वराज्य के लिए संघर्ष–

आन्दोलनकारी दलों का निर्माण एवं प्रवृत्तियाँ –

आप यह जानते हैं कि कॉंग्रेस ने प्रतिवर्ष अधिवेशन करके प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि की। महिलाओं की सहभागिता से भी सुधारात्मक आंदोलन शुरू किया। वे प्रार्थनापत्रों, निवेदनों के द्वारा अपनी माँगें ब्रिटिश सरकार के समक्ष रखते थे। सरकार माँगें पूरी करेगी, ऐसा उनका विश्वास

था। अँग्रेज सरकार ने उनकी माँगों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। भारतीय राष्ट्रीयता की भावना को कमजोर करने का प्रयास किया। तत्कालीन वायसराय कर्जन ने उस समय देश के सबसे बड़े बंगाल प्रांत का अक्टूबर 1905 में विभाजन कर दिया।

क्षेत्रफल की दृष्टि से बंगाल भारत का बड़ा प्रांत था। इसमें बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का भी समावेश था। अँग्रेजों ने इस विभाजन को प्रशासनिक सुविधा बताया किंतु उनका उद्देश्य राष्ट्रवाद की भावना को कमजोर करना था।

बंगाल प्रांत के विभाजन के पीछे प्रशासनिक सुविधा एक कारण हो सकता है, किन्तु वायसराय कर्जन का वास्तविक उद्देश्य हिन्दुओं एवं मुसलमानों में फूट डालकर राष्ट्रीय आंदोलन की भावना को कमजोर बनाना था। नवनिर्मित पूर्वी बंगाल में मुसलमान बहुसंख्यक थे। कर्जन की इस नीति का मुख्य उद्देश्य था मुस्लिम बहुल प्रांत का निर्माण करना तथा मुसलमानों को ब्रिटिश शासन का समर्थक बनाना।

बंगाल विभाजन का जनता पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? यदि इस प्रकार कोई घटना हो तो आप क्या करेंगे ? आप सभी आपस में चर्चा कीजिए।

बंगाल विभाजन से जनमत अत्यंत उग्र हो गया। लोगों ने उस दिन शोक दिवस मनाया। ब्रिटिश माल का बहिष्कार किया। स्वदेशी माल को खरीदने की शपथ ली। वन्देमातरम और स्वदेशी का नारा लगाया गया।

स्वदेशी अर्थात् अपने देश के लोगों द्वारा बनाई चीजों का ही उपयोग करना।

विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार किया। राष्ट्रीय भावना जागृत करनेवाली शिक्षण संस्थाओं (राष्ट्रीय विद्यालयों) की स्थापना हुई। अब बंग–भंग विरोधी आंदोलन एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन बन गया।

बंगाल विभाजन युक्तिसंगत नहीं था इसलिए अँग्रेज शासकों को 1911 में इसे रद्द करना पड़ा। यह घटना राष्ट्रवादियों के लिए बहुत बड़ी विजय थी।

कॉंग्रेस सतत् क्रियाशील रही। 1906 में कॉंग्रेस का अधिवेशन कलकत्ता में हुआ, जिसकी अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी ने की। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने स्वराज्य, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा तथा विदेशी बहिष्कार के चार सूत्रीय कार्यक्रम को बहुमत से स्वीकार किया। प्रारंभ में कॉंग्रेस में नरम विचारधारा वाले सदस्यों की बहुतायत थी। 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस दो भागों में विभक्त हो गई जिसे नरमदल एवं गरमदल के नाम से जाना जाता है।

नरम दल –

नरम दल के नेताओं को विश्वास था कि भारतीयों की माँगों पर न्यायोचित विचार करने के लिए ब्रिटिश शासकों को अनुनय–विनय करके मनाया जा सकता है। इसके प्रमुख नेता थे, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, गोपालकृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता आदि। 1905 में नरम विचारधारा वाले नेताओं के स्थान पर गरम विचारधारा अर्थात् उग्र राष्ट्रवादी नेताओं का महत्व बढ़ने लगा।

गोपालकृष्ण गोखले

गरम दल –

गरम दल के नेताओं का मत था कि सरकार से केवल अनुनय–विनय करके भारतीय अपने अधिकार प्राप्त नहीं कर सकते। वे अँग्रेजों की सत्ता को भारत से हर तरह से उखाड़ फेंकना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार की सद्भावना में इन नेताओं को कोई आस्था नहीं थी। उन्होंने जनता में आत्म–बल एवं देशप्रेम की भावना जगाई और देश के लिए कोई भी कुर्बानी देने के लिये तैयार रहने को कहा। ये नेता थे लाल–बाल–पाल अर्थात् लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक और विपिनचंद्र पाल।

लाला लाजपतराय | बाल गंगाधर तिलक | विपिनचंद्र पाल

1910 में अँग्रेजों के शोषण के विरुद्ध बस्तर में भूमकाल विद्रोह हुआ था।

इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन में नरम एवं गरम दल के नेताओं का उद्देश्य एक ही था किंतु इनके कार्य करने के तरीके अलग–अलग थे। इनके कार्यों से देश की जनता में राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने **"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं और इसे हम लेकर रहेंगे"** का नारा देकर जनता में देशप्रेम की भावना भर दी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित गीत **"वन्दे मातरम"** ने भारतवासियों में मातृभूमि के प्रति प्रेम और श्रद्धा की भावना जगाई।

लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' नामक समाचार पत्रों के द्वारा राष्ट्रवादियों को एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने जनता में राजनैतिक जागरण के लिए लोकप्रिय उत्सवों जैसे गणेश उत्सव एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए अनेक आंदोलन चलाए।

इसी समय छत्तीसगढ़ के राजिम में पं. सुंदरलाल शर्मा और पं.नारायणराव मेघावाले ने राष्ट्रीय खादी आश्रम की स्थापना की। स्वदेशी आंदोलन को प्रोत्साहित करने के लिए कम मूल्य में खादी बेचकर खादी को लोकप्रिय बनाया। मूल्य की कमी को उन्होंने अपना खेत बेचकर पूरा किया।

क्रांतिकारी आंदोलन – देश में ऐसे विचारधारावाले नौजवान भी थे जो अँग्रेजों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए उत्साही थे। वे सीधी कार्यवाही पर विश्वास करते थे। ऐसे उत्साही, समर्पित नवयुवकों के संगठन को क्रांतिकारी दल के नाम से जाना जाता था। इस क्रांतिकारी संगठन के अधिकांश सदस्य जोशीले नौजवान थे। वे गोला–बारूद बनाने एवं हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेते

श्यामजी कृष्ण वर्मा | मैडम भीखाजी कामा

एम.बरकतउल्लाह

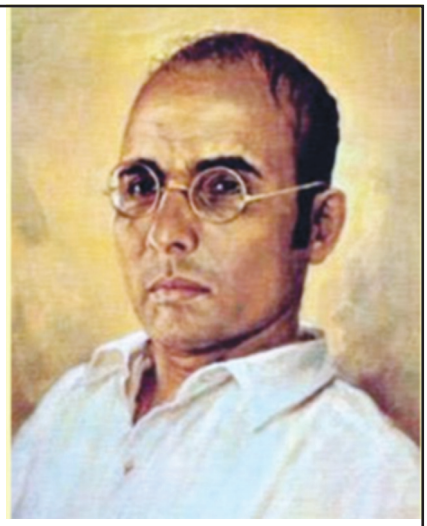

बी.डी.सावरकर

थे एवं अँग्रेजों के विरुद्ध सक्रिय संघर्ष के पक्षधर थे। वे महाराष्ट्र में अभिनव भारत एवं बंगाल में अनुशीलन समिति के सदस्य के रूप में सक्रिय थे। वे पंजाब और उत्तर भारत में भी अधिक क्रियाशील थे।

इनके अलावा विदेशों में भी श्यामजी कृष्ण वर्मा, मैडम भीकाजी कामा, एम. बरकतउल्लाह, बी.बी.एस. अय्यर,रास बिहारी बोस, बी.डी.सावरकर, ओबेदुल्ला आदि क्रांतिकारी प्रमुख थे। ये क्रांतिकारी अपने उद्देश्य में आंशिक रूप से सफल भी हुए। इनके आत्मबलिदान ने भारतीयों के हृदय में देशप्रेम और विदेशी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की भावना का प्रचार–प्रसार किया। ये क्रांतिकारी देश के लिए प्रेरणास्रोत बने।

अँग्रेजों की भारतीयों में फूट डालो नीति के कारण ढाका के नवाब सलीमउल्ला खाँ की अध्यक्षता में 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। प्रारंभ में मुस्लिम लीग ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठा प्रकट की थी। बाद में उन्हें भी अँग्रेजों की दोहरी नीति समझ में आ गई। अंततः लखनऊ में सन् 1916 की सर्वदलीय बैठक में समझौता हुआ। परिणामस्वरूप हिन्दू–मुस्लिम दोनों ने मिलकर असहयोग आंदोलन में अँग्रेजों के विरुद्ध जबरदस्त संघर्ष किया। छत्तीसगढ़ में भी क्रांतिकारी संगठन संचालित हुए। इन संस्थाओं में मालिनी रीडिंग क्लब, पीपुल टीचर्स एसोसिएशन, कवि समाज राजिम एवं छत्तीसगढ़ बाल समाज प्रमुख संगठन थे। इन संगठनों ने छत्तीसगढ़ के युवकों को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तन की प्रेरणा दी और छत्तीसगढ़ की जनता में राष्ट्रीय जागृति के मार्ग को प्रशस्त किया। उनका उद्देश्य समाज–सुधार के साथ ही राष्ट्रीय भावना को विकसित करना था।

नरमदल और गरमदल का प्रभाव रायपुर के प्रांतीय अधिवेशन पर भी पड़ा। यहाँ वन्देमातरम् राष्ट्रीय गीत से कार्यवाही की शुरुआत करने के सुझाव पर वैचारिक मतभेद हुए। दादा साहेब खापर्डे एवं उनके साथियों ने तात्यापारा रायपुर के हनुमान मंदिर के सामने 'वन्दे मातरम्' का सामूहिक नारा लगाया तथा जनसभा में स्वदेशी के महत्व को समझाया।

सन् 1911 में कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को भारत की राजधानी बना दिया गया।

दिल्ली को भारत की राजधानी क्यों बनाया गया ? आपस में चर्चा कीजिए।

यूरोप में कुछ ऐसे भारतीय युवा छात्र थे, जो कि भारत की आजादी के लिए सशस्त्र क्रांति एवं संघर्ष का विचार रखते थे। ऐसे ही विचारवाले युवाओं का एक दल 'गदर पार्टी' के नाम से 1913 में उत्तर अमेरिका में सक्रिय था। उसके नेता लाला हरदयाल थे। इनकी सक्रियता के कारण ही इन्हें देश से निष्कासित किया गया था। कुछ समय बाद गदर पार्टी के कुछ सदस्य भारत में लौट

आए। प्रथम विश्वयुद्ध से लौटे सिपाहियों के बीच सशस्त्र क्रांति के तरीकों का प्रचार किया। इसी बीच यूरोप के साम्राज्यवादी देशों के दो विरोधी गुटों के बीच शत्रुता के कारण सन् 1914 में एक बड़ा युद्ध हुआ जो 1918 तक चला। इसे ही प्रथम विश्वयुद्ध कहते हैं।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय साधनों और सिपाहियों का युद्ध में उपयोग किया। प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव एवं ब्रिटिश सरकार की जन विरोधी नीतियों के कारण से दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दाम बढ़ने लगे। इस समय ब्रिटिश सरकार ने नागरिकों पर अनेक प्रतिबंध लगा दिए। अतः भारतीयों में असंतोष बढ़ने लगा था। ऐसी स्थिति को देखते हुए आयरलैंड से भारत आई, महिला डॉ.श्रीमती एनी बेसेंट ने होमरूल आंदोलन प्रारंभ किया।

होमरूल अर्थात् स्वशासन जिसका अर्थ है अपने शासन को स्वयं चलाना। इससे देश के आंतरिक शासन को संचालित करने का अधिकार भारतीयों को प्राप्त हो जाता। इसे ही स्वराज्य भी कहा जाता है।

डॉ. श्रीमती एनी बिसेंट

डॉ. एनीबेसेंट एवं बालगंगाधर तिलक ने सम्पूर्ण देश में सघन दौरा किया एवं स्वराज्य की माँग को लोगों तक पहुँचाया।

भारत में बढ़ते असंतोष, होमरूल आंदोलन की बढ़ती लोकप्रियता और यूरोप की युद्धजन्य परिस्थितियों के कारण ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को कुछ महत्वहीन विभाग सौंप दिए थे। इसी नियम के अंतर्गत मध्यप्रांत के विधान परिषद का प्रथम चुनाव हुआ। इसमें छत्तीसगढ़ से बहुत से नेता चुनकर गए जिनमें प्रमुख थे, ई. राघवेन्द्र राव, पं.रविशंकर शुक्ल, शिवदास डागा एवं बाजीराव कृदत्त आदि।

(ग) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और गांधी जी–

सन् 1920 से राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गाँधी ने किया। गाँधी जी की नेतृत्व शैली एवं आंदोलन की नई पद्धति ने राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक व्यापक बनाया। इससे स्वाधीनता संघर्ष में एक नए अध्याय की शुरुआत हुई।

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। उनका जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा के बाद वे इंग्लैंड चले गए। इंग्लैंड में अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे एक बैरिस्टर (वकील) के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए। दक्षिण अफ्रीका में गोरों अर्थात यूरोपीयों का शासन था। अफ्रीकी लोगों तथा वहाँ रहनेवाले भारतीयों को हीन समझा जाता था। उनके द्वारा दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए उन्होनें वहाँ के भारतीयों पर होनेवाले अत्याचारों के खिलाफ अँग्रेज शासकों के विरुद्ध संघर्ष किया। अँग्रेजों द्वारा भारतीयों के साथ रंगभेदी व्यवहार को देखकर उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन किया जिससे सरकार को झुकना पड़ा।

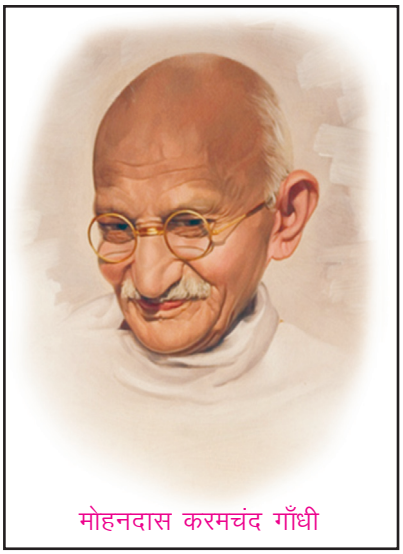
मोहनदास करमचंद गाँधी

सत्याग्रह– अत्याचार, शोषण के विरुद्ध आंदोलन का अहिंसात्मक तरीका है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के लिये आग्रह अर्थात् शोषण के विरुद्ध शांति पूर्ण तरीके से आंदोलन।

दक्षिण अफ्रीका से गाँधी जी सन् 1915 ई. में भारत लौटे। भारतीय राजनीति में उनका पदार्पण प्रथम महायुद्ध के दौरान हुआ। उन्होंने अत्याचारों एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष का अपना तरीका विकसित किया। इसका व्यावहारिक अनुभव उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में प्राप्त किया था। वे आंदोलन के लिए हिंसा का मार्ग अपनाना उचित नहीं मानते थे। उनका विश्वास था कि हमें सत्य के लिए आग्रह करना चाहिए अर्थात् सत्याग्रह।

गांधी जी ने सत्याग्रह के लिए कार्यक्रम बनाए।

1. *अन्याय करने वाले का सहयोग न करना अर्थात् असहयोग*
2. *अनुचित बातों को मानने से इंकार करना अर्थात् अवज्ञा।*

गाँधी जी ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण करके भारतीयों की दशा का अध्ययन किया। इस लिए उन्होंने किसानों, मजदूरों एवं दलितों की समस्याओं को उठाया। गाँधी जी लोगों की छोटी–छोटी किंतु महत्वपूर्ण समस्याओं को हल करने के लिए आंदोलन करते थे। वे सरकार से माँग करते थे कि लगान कम करे; जंगल के उपयोग पर पाबंदी हटाए, शराब की बिक्री बंद करे।

वे शराब की बिक्री बंद क्यों कराना चाहते थे ? क्या वर्तमान में बिक्री नहीं होती है? ऐसा क्यों है ? आपस में चर्चा कीजिए।

गांधी जी के नेतृत्व में हजारों–लाखों की संख्या में लोग ब्रिटिश सरकार की नीतियों के विरूद्ध आंदोलन के लिए निकल पड़े। आइए जानें कि 1920 में असहयोग आंदोलन शुरु करने के पूर्व गांधी जी के नेतृत्व में मुख्य रूप से कहाँ–कहाँ सत्याग्रह किए गए–

चम्पारण –

बिहार अंचल के चम्पारण जिले में अँग्रेज जमींदारों द्वारा किसानों को नील की खेती करने के लिए विवश किया जाता था। अँग्रेजों ने बंगाल पर कब्जे के बाद अफीम, जूट और नील की खेती को बढ़ावा दिया था। अँग्रेज किसानों को जबरदस्ती नील उगाने के लिए बाध्य करते थे।

अफीम, नील, जूट– ये तीनों ही व्यावसायिक फसलें थीं। इनका किसानों के लिए कोई उपयोग नहीं था। वे इन्हें बाजार में या फिर अँग्रेज जमींदारों को ही बेचते थे। अफीम का इस्तेमाल नशे के लिए किया जाता है। उस वक्त अँग्रेज व्यापारी इसे चीन में ले जाकर बेचते थे जिससे उन्हें काफी मुनाफा होता था। नील का इस्तेमाल कपड़ों को रंगने के लिए किया जाता है। आज जो हम नील इस्तेमाल करते हैं वह एक प्रकार का रसायन है। लेकिन सन् 1920 के दशक से पहले इसकी खेती होती थी। आज इसकी खेती नहीं होती। जूट तो आप जानते ही होंगे। इससे रस्सी, बोरे, कपड़े, थैला आदि बनाए जाते हैं।

नील उगाने को मजबूर किए जा रहे किसान कई बार विरोध करते थे। अँग्रेजों के अत्याचार से किसानों को मुक्त कराने के लिए गांधी जी ने चम्पारण जाकर सत्याग्रह किया। आखिर में सरकार ने अँग्रेज जमीदारों द्वारा जबरदस्ती नील की खेती कराने की प्रथा को रद्द किया।

खेड़ा सत्याग्रह –

गुजरात के खेड़ा जिले में अकाल पड़ा और प्लेग भी फैला। फलस्वरूप लगान चुकाना किसानों के लिए असम्भव हो गया। खेड़ा जिले में लगानबंदी के लिए आंदोलन हुआ। गाँधी जी के नेतृत्व में किसानों ने आंदोलन किया। सरकार को झुकना पड़ा और लगान माफ कर दिया गया।

कंडेल सत्याग्रह –

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के कंडेल ग्राम का सत्याग्रह देशव्यापी हो गया। धमतरी के पास महानदी के तट पर रुद्री नामक स्थान है, तथा माडम सिल्ली में भी इसी नदी पर बाँध बनाया गया है। इससे नहर निकाली गई है जिस पर सरकार नहर कर वसूलती थी। इसके लिए दसवर्षीय अनुबंध करना पड़ता था। वह राशि इतनी अधिक हो जाती थी कि इस राशि से किसान अपने गाँव में ही सिंचाई के लिए एक विशाल तालाब निर्मित कर सकते थे। अतः किसान उस अनुबंध के लिए तैयार नहीं थे। अँग्रेजी प्रशासन ने जबरदस्ती कंडेल ग्राम नहर पानी छोड़ दिया। किसानों से हर्जाना वसूल करते हुए अनुबंध के लिए बाध्य किया। पानी चोरी करने का आरोप भी लगाया। ग्रामवासियों को सत्याग्रह करना पड़ा। पं सुंदरलाल शर्मा, नारायणराव मेघावाले एवं बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव इस आन्दोलन के सूत्रधार थे। अगस्त 1920 में सम्पूर्ण जिले में एक साथ आंदोलन हुआ। किंतु अँग्रेज नौकरशाही ने इसकी परवाह नहीं करते हुए रकम वसूली हेतु कुर्की वारंट जारी कर दिया। ग्रामवासियों के सभी मवेशियों (पशुओं) को कुर्क कर लिया। शासन पशुओं की नीलामी करके धनराशि प्राप्त करने की योजना बनाने लगी बाजार के दिन गाँव–गाँव में पशुओं को नीलामी हेतु ले जाया जाता था। हर गाँव में बोली लगाना तो दूर ग्रामवासी उन पशुओं के नजदीक तक नहीं जाते थे।

ग्रामवासी नीलामी बोली क्यों नहीं लगाते थे ? क्या आज भी पशुओं की नीलामी होती है? उसकी प्रक्रिया पर आपस में चर्चा कीजिए।

जनता में राष्ट्रीय चेतना आ रही थी। शासन को इससे भारी निराशा हुई। कंडेल ग्राम में यह सत्याग्रह पाँच महीने तक चला। अतः गाँधी जी से इस आंदोलन के नेतृत्व का आग्रह किया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया और नागपुर में होनेवाले काँग्रेस अधिवेशन के समय छत्तीसगढ़ के कंडेल ग्राम में आने का समय दिया।

इस मध्य रायपुर डिप्टी कमिश्नर ने जाँच–पड़ताल की। इससे शासन को सही तथ्यों की जानकारी हुई। किसानों द्वारा दृढ़तापूर्वक सत्य पर अड़े रहने के कारण शासन को संपूर्ण कार्यवाही रद्द करनी पड़ी और मवेशियों को छोड़ना पड़ा। गाँधी जी के छत्तीसगढ़ आगमन के पूर्व ही यह कंडेल किसान आंदोलन/सत्याग्रह सफलतापूर्वक समाप्त हो गया।

गाँधी जी के 20 दिसम्बर 1920 को छत्तीसगढ़ आगमन से यहाँ की राजनीतिक हलचलें बढ़ीं तथा राष्ट्रीय आंदोलन और तीव्र हो गया। रायपुर, धमतरी प्रवास में गाँधी जी के स्वागत हेतु अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। आंदोलन की इस शानदार विजय के बाद गाँधी जी ने भी छत्तीसगढ़ में प्रवेश किया। स्वतंत्रता आंदोलन को आगे बढ़ाने में यहाँ की जनता का मार्गदर्शन तथा उत्साहवर्धन किया। जनता का उत्साह दर्शनीय था।

धमतरी के प्रसिद्ध मकई चौक में गाँधी जी के भाषण की व्यवस्था थी। अपार जन समूह गाँधी जी को देखने, सुनने एकत्रित था। खुली कार से ले देकर मुख्य द्वार तक तो पहुँचे किन्तु अपार

जन समूह के कारण गाँधी जी मंच तक पहुँचने में असमर्थ थे अतः पास के गुरूर नामक गाँव का एक व्यापारी उमर सेठ ने गांधी जी को अपने कंधों पर बैठाकर सुसज्जित मंच पर पहुँचाया।

धमतरी एवं कुरूद से वापस लौटने के बाद गाँधी जी पुनः रायपुर में रुके और महिलाओं की एक सभा को संबोधित किया। यहाँ तिलक स्वराज्य फंड हेतु महिलाओं ने तुरन्त हजारों रुपए के गहने उन्हें दे दिये। गाँधी जी ने युवकों के साथ महिलाओं को भी राष्ट्रीय आंदोलन में जूझने की प्रेरणा दी।

मिल मजदूर आंदोलन –

ठाकुर प्यारे लाल सिंह

लगातार मँहगाई बढ़ते जाने पर भी अहमदाबाद की सूती कपड़े की मिलों के मजदूरों के वेतन में वृद्धि नहीं की जा रही थी और बोनस भी नहीं दिया गया था। गांधी जी ने मजदूरों के समर्थन में आंदोलन किया। अतः मालिकों को हार माननी पड़ी।

इस समय मजदूरों में राष्ट्रीय जागृति आ चुकी थी। सन् 1908 में बाल गंगाधर तिलक की गिरफ्तारी के विरोध में मुंबई में मजदूरों ने हड़ताल कर दी। 1917 में रूस की क्रांति की सफलता के कारण भारत में भी मजदूर संगठनों की स्थापना हुई। इन संगठनों ने कई बार मजदूर हितों के लिए संघर्ष और आंदोलन किया; इन्हें सफलता भी मिली।

छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ी मिल 'बंगाल–नागपुर कॉटन मिल', राजनादगाँव में थी। यहाँ के मजदूरों में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव पड़ा। अपनी स्थिति को सुधारने के लिए मजदूरों ने हड़ताल कर दी। इस हड़ताल का नेतृत्व वहाँ पर वकालत कर रहे ठाकुर प्यारे लाल सिंह ने किया।

इस समय तक संपूर्ण भारत राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से उत्साहित था। देश में बढ़ते जा रहे राष्ट्रीय आंदोलन पर नियंत्रण रखने के लिए अँग्रेज सरकार ने 1919 में रोलेट एक्ट नामक नया कानून बनाया। इससे सरकार को किसी भी भारतीय को बिना किसी आरोप सिद्ध हुए या न्यायालय में पेश किये बगैर कारागार में बंद रखने का अधिकार था। काला कानून के रूप में कुख्यात इस एक्ट के विरुद्ध संपूर्ण देश में विरोध की लहर फैल गई।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड –

PS57MC

रोलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन ने पंजाब में अधिक उग्र रूप धारण किया। सरकार का दमन चक्र और तेज हुआ। राष्ट्रवादी नेता सत्यपाल और डॉ. सेफुद्दीन किचलू के गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया था। यह बाग तीन ओर से ऊँची दीवारों से घिरा था और एक मात्र छोटी गली से बाग में आने–जाने का रास्ता था।

13 अप्रैल 1919 की इस सभा में काफी संख्या में लोग इकट्ठे हुए। इनमें युवक, वृद्ध, पुरुष, महिलाएँ तथा बच्चे भी थे। तभी अचानक ब्रिटिश जनरल डायर ने बिना चेतावनी दिए निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया। इसमें कई सौ निर्दोष लोगों की मृत्यु हो गई और हजारों लोग घायल हुए। वह बैसाखी त्यौहार का दिन था।

जलियाँवाला बाग की दीवारों पर गोलियों के निशान आज भी देखे जा सकते हैं। जलियाँवाला बाग एक राष्ट्रीय स्मारक है।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड का एक चित्र

इस जघन्य हत्याकांड के कारण संपूर्ण भारत में आक्रोश एवं विरोध प्रगट करने के लिए सर्वत्र सभाएँ हुईं। बिलासपुर एवं रायपुर में भी सभा हुई, जहाँ उस हत्याकांड की आलोचना कटु शब्दों में की गई। कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त सम्मान ''सर'' की उपाधि का परित्याग किया। इसने मध्यमवर्गी राष्ट्रवाद को जन–जन वर्गीय राष्ट्रवाद में परिवर्तित कर दिया।

(घ) पूर्ण स्वराज्य की ओर –

जलियाँवाला बाग कांड से भारतीय जनता बहुत संतप्त थी। इंग्लैंड की संसद के उच्च सदन ने तो जनरल डायर के कार्यों का समर्थन भी किया था। इन घटनाओं से अँग्रेजों की न्याय परायणता से उदारवादी नेताओं का भी विश्वास जाता रहा। इन्हीं दिनों भारत के मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन शुरू किया।

तुर्किस्तान के सुल्तान विश्व के सभी मुसलमानों के धर्म गुरू थे। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों ने तुर्की की नई सरकार पर समझौते के अन्तर्गत कठोर शर्तें लाद दीं। इसके अनुसार खलीफा (धर्मगुरू) का पद समाप्त कर दिया गया। इसे पुनः स्थापित करने के लिए भारतीय मुसलमानों ने आंदोलन किया। यही खिलाफत आंदोलन कहलाता है। गांधी जी का विश्वास था कि खिलाफत के प्रश्न पर राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन किया जाए तो हिंदू–मुसलमान एकता तो सुदृढ़ होगी ही वहीं राष्ट्रीय आंदोलन और सशक्त बनेगा। अतः गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया और 1 अगस्त 1920 ई. को असहयोग आंदोलन शुरू कर दिया।

असहयोग आंदोलन को देश भर में समर्थन मिला। विद्यार्थी भी अब बड़ी संख्या में शामिल हुए। राष्ट्रीय शिक्षा देनेवाले विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की स्थापना हुई। राष्ट्रवादियों ने दिल्ली में **जामिया मिलिया** तथा वाराणसी में **काशी विद्यापीठ** जैसी राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं। लोगों ने सरकारी नौकरी छोड़ दी। वकीलों ने अदालत का बहिष्कार कर दिया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया और उनकी होली जलाई गई। छत्तीसगढ़ में किसानों एवं मजदूरों ने अत्यधिक उत्साह और तत्परतापूर्वक भाग लिया। जनता ने कॉंग्रेस के कार्यक्रमों को प्रबल समर्थन दिया। स्वदेशी का प्रभाव गाँव–गाँव पहुँच गया। अँग्रेजों के अत्याचार, गोलीबारी और गिरफ्तारियाँ आंदोलन की लहर को नहीं रोक सकीं। अँग्रेजों नें आंदोलन को बर्बरतापूर्वक कुचलने का प्रयास किया।

केरल प्रांत के कुछ भागों में मोपला किसानों ने आंदोलन किया। मोपला कैदियों को रेल बैगनों में ठूँसकर एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया गया। दम घुटने से 67 मोपला किसानों की मृत्यु हो गई। अँग्रेजों ने 45 हजार मोपला किसानों को बंदी बनाया। गांधी जी ने गुजरात के बारदोली स्थान पर यह आंदोलन शुरू किया। जनता अब खुलेआम घोषणा करती थी कि वह कर नहीं पटाएगी। गाँधी जी ने सदैव इस बात पर जोर दिया कि समूचा आंदोलन शांतिपूर्ण एवं अहिंसक होना चाहिए। 5 फरवरी 1922 को उत्तरप्रदेश के चौरी–चौरा में लोगों ने शांतिपूर्ण जुलूस निकालकर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान कुछ प्रदर्शनकारियों की पुलिस से बहस हो गई। उसके बाद क्रुद्ध भीड़ ने पुलिस चौकी में आग लगा दी। कई सिपाही जलकर मर गए। अँग्रेजी शासन ने 22 सिपाहियों की हत्या के जुर्म में 19 किसानों को फाँसी पर चढ़ाया और 150 किसानों को कालापानी का दंड दिया। इस घटना से गाँधी जी अत्यंत दुखी हुए और 12 फरवरी 1922 को उन्होनें असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।

गाँधी जी ने चौरी–चौरा कांड के बाद आंदोलन क्यों वापस ले लिया ? देश में इसकी क्या प्रतिक्रिया हुई होगी ?

असहयोग आंदोलन स्थगित किए जाने के कारण कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मोती लाल नेहरू, चितरंजन दास के मन में सरकार के कार्यों में बाधा डालने के लिए चुनाव लड़कर विधान मंडलों में प्रविष्ट होने का विचार आया। काँग्रेस में ही कुछ सदस्यों ने स्वराज दल के नाम से एक स्वतंत्र गुट बनाया। 1923 के विधान मंडल के चुनाव में जीतकर केंद्रीय तथा प्रांतीय विधान मंडलों में पहुँचे। केंद्रीय विधान मंडल में मुस्लिम लीग की सहायता से उन्होंने नागरिक अधिकारों का हनन करनेवाली सरकारी योजनाओं का विरोध किया। मध्यप्रांत के विधान मंडल में छत्तीसगढ़ के स्वराज दल के चुने हुए प्रतिनिधियों ने 1919 के अधिनियम की कमियों को उजागर किया।

आप जानते हैं कि राष्ट्रीय आंदोलन में बहुत–से नौजवान क्रांतिकारी तरीके से संघर्ष करना चाहते थे।

असहयोग आंदोलन के दौरान क्रांतिकारी सशस्त्र क्रांति का रास्ता छोड़कर असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए थे। असहयोग आंदोलन अचानक वापस ले लेने के कारण उन्हे निराशा हुई। उन्होंने अपना क्रांतिकारी आंदोलन पुनः प्रारंभ किया। पुराने सक्रिय क्रांतिकारी सचिन्द्र नाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल तथा योगेशचन्द्र चटर्जी इनके नेता थे।

इन क्रांतिकारियों ने लखनऊ के निकट काकोरी में एक रेलगाड़ी को रोककर सरकारी खजाना लूटा। सरदार भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने लाहौर में पुलिस सार्जेंट सैंडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी थी। सैंडर्स ने एक प्रदर्शन के दौरान लाला लाजपत राय पर लाठियाँ बरसाई थीं जिससे उनकी मृत्यु हो गई थी। इसके बाद भगत सिंह और सुखदेव ने दिल्ली की केंद्रीय विधान सभा में 8 अप्रैल 1929 को बम फेंका। उनके बम फेंकने का उद्देश्य किसी को मारना या घायल करना नहीं था, बल्कि अपनी बात आम जनता तक पहुँचाना था। इसीलिए बम फेंकने के बाद वे भागे नहीं बल्कि वहीं खड़े रहे। इस बम कांड में गिरफ्तारी के बाद भगत सिंह, राजगुरु और

सुखदेव को सैंडर्स की हत्या के आरोप में फाँसी की सजा दी गई थी। इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में एक मुठभेड़ के दौरान चन्द्रशेखर आजाद शहीद हो गए। आजाद के शहीद होने के पश्चात् पंजाब, उत्तरप्रदेश और बिहार में क्रांतिकारी आंदोलन लगभग समाप्त–सा हो गया।

राजगुरू

भगत सिंह

सुखदेव

इसी बीच राष्ट्रीय आंदोलन में नौजवान नेताओं पर समाजवादी विचारों एवं रूसी क्रांति का गहरा प्रभाव पड़ा। समानता पर आधारित समाज की स्थापना में राष्ट्रीय आंदोलन का लक्ष्य बनाया। इनमें प्रमुख नेता थे पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस।

पं. जवाहर लाल नेहरू ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होने राजाओं द्वारा शासित राज्यों में शुरू हुए जनता के संघर्ष को आजादी के राष्ट्रीय आंदोलन का अंग बनाने में सहायता की।

सुभाषचन्द्र बोस कुशाग्र बुद्धिवाले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने इंडियन सिविल सर्विस की प्रतिष्ठित सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर देश के विद्यार्थियों और जवानों को आजादी के संघर्ष में जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संपूर्ण भारत में पं. जवाहर लाल नेहरू ''चाचा नेहरू'' तथा सुभाष चन्द्र बोस ''नेता जी'' के नाम से लोकप्रिय हैं।

पं. जवाहर लाल नेहरू

हमारे देश में इसी प्रकार अन्य कई राष्ट्रीय नेता हैं जो अन्य उपनाम से लोकप्रिय हैं। इनकी सूची बनाइए। आपके क्षेत्र के भी कुछ लोकप्रिय नेताओं के नाम जोड़कर उनका जीवन परिचय संग्रह कीजिए।

सन् 1929 ई. के दिसंबर माह के अंतिम सप्ताह में काँग्रेस का अधिवेशन लाहौर में हुआ। इस अधिवेशन में पं. जवाहरलाल नेहरू ने विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में 'राष्ट्रीय ध्वज' फहराया और पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति तक निरंतर संघर्ष करते रहने की शपथ ली।

26 जनवरी 1930 को सम्पूर्ण देश में प्रतिज्ञा दिवस मनाया गया।

इसके फलस्वरूप देश भर में सर्वत्र उत्साह का वातावरण बन गया। इस अधिवेशन में गांधी जी को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि वे अँग्रेज शासन के खिलाफ एक और आंदोलन शुरू करें।

गाँधी जी ने वायसराय से नमक पर लगे कर तथा नमक बनाने के सरकार के एकाधिकार को समाप्त करने की माँग की। नमक जैसी आवश्यक वस्तु पर कर लगाया जाना अन्यायपूर्ण था। नमक सत्याग्रह प्रतीकात्मक था। इसका उद्देश्य था ब्रिटिश सरकार के सभी अत्याचारों एवं अन्यायपूर्ण कानूनों की अवहेलना करना।

गांधी जी ने 78 कार्यकर्ताओं के साथ साबरमती आश्रम से समुद्र के किनारे दांडी नामक स्थान की ओर प्रस्थान किया। 385 कि.मी. की इस पदयात्रा में असंख्य कार्यकर्ता आ मिले। 6 अप्रैल सन् 1930 को दांडी पहुँचकर समुद्र तट में नमक बनाकर उन्होंने कानून भंग किया। इसके साथ ही देश भर में कानूनों की अवज्ञा का आंदोलन आरंभ हो गया।

उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खान ने 'खुदा–ई–खिदमतगार' नामक संगठन बनाया और पेशावर में सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया।

छत्तीसगढ़ में बिलासपुर नगर पालिका की बैठक में शासकीय भवनों पर राष्ट्रीय तिरंगा फहराने का प्रस्ताव पारित हुआ। वहीं संपूर्ण छत्तीसगढ़ में 'कर न दो और पट्टा मत लो' का आन्दोलन शुरू हुआ।

छत्तीसगढ़ में 'जंगल सत्याग्रह' कार्यक्रम का सविनय अवज्ञा आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान है। यह आंदोलन सर्वाधिक अवधि तक चलनेवाला प्रभावशाली आंदोलन रहा है। इसकी विशेषता यह थी कि इसमें शहरी लोगों की अपेक्षा ग्रामीणों एवं आदिवासियों ने विशेष साहस का प्रदर्शन किया था। ब्रिटिश शासन ने जंगल के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था जबकि वनवासियों का जंगलों पर पुस्तैनी अधिकार था।

प्रसिद्ध डांडी मार्च के दौरान गाँधी जी अपने स्वयंसेवकों के साथ

दुर्ग जिले का मोहबना जंगल सत्याग्रह शांतिपूर्ण एवं सफल रहा। पौंडी गाँव के जंगल सत्याग्रह ने जन समुदाय को भी प्रभावित किया। रुद्री नवागाँव (धमतरी जिला) का जंगल सत्याग्रह इतना उग्र था कि संपूर्ण धमतरी तहसील उसके प्रभाव में आया। महासमुंद जिले के तमोरा गाँव में एक महिला दयावती के नेतृत्व में धारा 144 तोड़कर जंगल कानून भंग किया गया। पकरिया जंगल सत्याग्रह में दो हजार ग्रामीणों ने अपने 4000 पशुओं के साथ जंगल कानून तोड़ा। इस मध्य 6 अप्रैल से 13 अप्रैल 1930 ई. तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाने की योजना बनाई गई जिसका स्वरूप था, झंडा दिवस, बहिष्कार दिवस, राजबंदी दिवस।

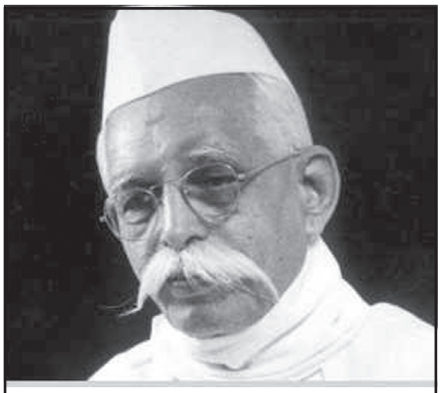
पं. रविशंकर शुक्ल

8 जनवरी 1932 को पं.रविशंकर शुक्ल की अध्यक्षता में द्वितीय अवज्ञा आंदोलन के कार्यक्रम तय हुए। इसमें विदेशी वस्तु बहिष्कार मुख्य कार्यक्रम था जो सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में प्रभावशाली ढ़ंग से संचालित हुआ। इस अंचल में जगह–जगह सत्याग्रह आश्रम स्थापित किए गए। इसके बाद सन् 1937 ई में देश भर में विधान मंडलों के लिए चुनाव हुए। इस चुनाव के बाद अधिकांश प्रातों में काँग्रेस की सरकार बनी। काँग्रेसी सरकार ने जनता की भलाई के लिए कई काम किए, किंतु 1939 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध में भारत के भाग लेने का निर्णय अँग्रेज शासकों द्वारा लिए जाने के कारण इन सरकारों ने इस्तीफा दे दिया। काँग्रेस के नेताओं ने एक बार फिर गांधी जी से देशव्यापी आंदोलन छेड़ने के लिए अनुरोध किया।

सुभाषचन्द्र बोस

इस मध्य संपूर्ण भारत में क्रांतिकारी गतिविधियाँ निरंतर होती रहीं। राष्ट्रीय नेता भूमिगत होकर कार्य संचालित करने लगे। नेता जी सुभाषचंद्र बोस ने ''फारवर्ड ब्लाक'' नाम से युवकों का संगठन स्थापित किया तथा कालांतर में त्वरित कार्यवाही हेतु ''आजादहिंद फौज'' का गठन किया।

सुभाषचंद्र बोस ने भारतीयों को संघर्ष में शामिल होने का आह्वान करते हुए कहा– ''तुम मुझे खून दो– मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

छत्तीसगढ़ में भी युवकों ने असेंबली में बम कांड जैसा साहसिक कार्य करने का संकल्प लिया था। उन्होंने रायपुर नगर में अपने साथियों के साथ मिलकर बम, रिवाल्वर बनाना सीख लिया था। इसमें परसराम सोनी, सुधीर मुखर्जी, मंगल मिस्त्री, सूर बंधु आदि अनेक लोग शामिल थे। किंतु इन क्रांतिकारियों को उनके ही अपने मित्र की मुखबिरी के कारण पकड़ लिया गया। इतिहास में यह 'रायपुर षड़यंत्र केस' के नाम से जाना जाता है, जिसमें 15 अभियुक्त एवं 71 गवाह थे। रायपुर षड़यंत्र के क्रांतिकारियों को कठोर सजा दी गई।

मुंबई के विशेष अधिवेशन में 8 अगस्त 1942 को ' अँग्रेजों! भारत छोड़ो का प्रस्ताव पारित किया गया। ब्रिटिश सरकार ने हर संभव कठोरता एवं बर्बरता से आंदोलन को दबाने का प्रयास किया। अंततः गांधी जी ने पूरे देश से आह्वान किया – ''करो या मरो''।

सार्वजनिक स्थानों पर तिरंगा फहराया गया। सत्याग्रहियों ने गिरफ्तारी दी। वास्तव में यह सबसे व्यापक स्तर पर अहिंसात्मक जन आंदोलन शुरू करने की स्वीकृति थी, जिसका लक्ष्य स्पष्ट था। यह दिखाई दे रहा था कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारतीयों को अब अँग्रेज सरकार का कोई भय नहीं था।

जेल से रिहा होनेवाले नेताओं की अगवानी के लिए भारी भीड़ जमा होने लगी। युद्ध के दौरान अँग्रेज सरकार ने कुछ मामूली–सी संवैधानिक सुधारों की सिफारिश की थी, किंतु भारतीय नेताओं ने अस्वीकार कर दिया।

वायसराय ने काँग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं से चर्चा की। मुहम्मद अली जिन्ना चाहते थे कि कार्यकारी परिषद् में मुस्लिम प्रतिनिधि की नियुक्ति का पूर्ण अधिकार मुस्लिम लीग को मिले यह काँग्रेस को मान्य नहीं था।

मार्च 1946 में अँग्रेज सरकार ने स्वतंत्रता की माँग स्वीकार कर ली। काँग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य समझौता वार्ता आवश्यक माना गया। इधर फरवरी 1946 के प्रांतीय परिषदों के चुनाव में काँग्रेस को बहुमत से सफलता मिली थी। इसलिए 1946 में अंतरिम सरकार के गठन को स्वीकृति मिली जिसका नेतृत्व पं. जवाहरलाल नेहरू के हाथों में था। इसके विरोध में मुस्लिम लीग ने सीधी कार्यवाही दिवस मनाया। इससे हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही प्रभावित हुए। पुनः वार्ता की गई। निर्णय हुआ कि अँग्रेज जून 1948 तक भारत से बाहर चले जाएँगे।

इस संवैधानिक प्रक्रिया के अंतर्गत नए वायसराय लार्ड माउंट बेटन को भारत भेजा गया। इंग्लैंड की संसद में एक कानून पारित किया गया जिसे 1947 का भारतीय स्वाधीनता अधिनियम कहते हैं। काँग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य विवाद को सुलझाने का भरसक प्रयास किया गया। अंततः देश में हो रहे दंगे एवं अंतरिम सरकार में मतभेद तथा तनावों के कारण देश का विभाजन अनिवार्य हो गया। भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा रेखा खींचने के लिए विभाजन परिषद् एवं सीमा आयोग ने अपना कार्य शुरू कर दिया। 1947 में सभी राजनैतिक दलों ने पाकिस्तान को अलग राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया। दोनों देशों की सीमाएँ निर्धारित की गई। ब्रिटेन की संसद द्वारा पारित भारतीय स्वाधीनता अधिनियम के अंतर्गत भारत तथा पाकिस्तान दो स्वतंत्र देशों में बाँट दिया गया। इसलिए भारत 15 अगस्त तथा पाकिस्तान 14 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है।

स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ 1879–1947

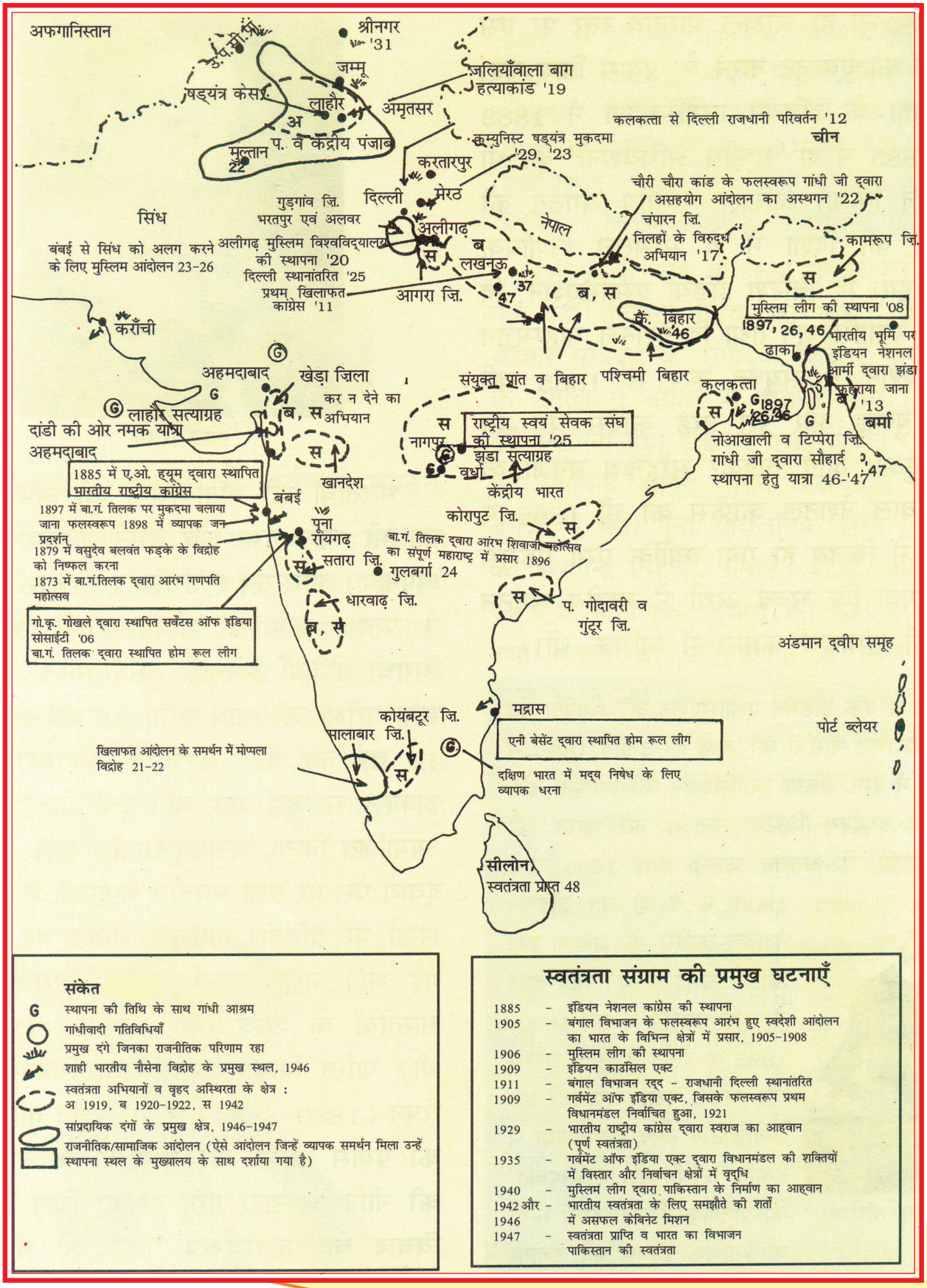

संकेत

- G — स्थापना की तिथि के साथ गांधी आश्रम
- गांधीवादी गतिविधियाँ
- प्रमुख दंगे जिनका राजनीतिक परिणाम रहा
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह के प्रमुख स्थल, 1946
- स्वतंत्रता अभियानों व वृहद अस्थिरता के क्षेत्र : अ 1919, ब 1920-1922, स 1942
- सांप्रदायिक दंगों के प्रमुख क्षेत्र, 1946-1947
- राजनीतिक/सामाजिक आंदोलन (ऐसे आंदोलन जिन्हें व्यापक समर्थन मिला उन्हें स्थापना स्थल के मुख्यालय के साथ दर्शाया गया है)

स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ

1885	–	इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना
1905	–	बंगाल विभाजन के फलस्वरूप आरंभ हुए स्वदेशी आंदोलन का भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसार, 1905-1908
1906	–	मुस्लिम लीग की स्थापना
1909	–	इंडियन काउंसिल एक्ट
1911	–	बंगाल विभाजन रद्द – राजधानी दिल्ली स्थानांतरित
1909	–	गवर्मेंट ऑफ इंडिया एक्ट, जिसके फलस्वरूप प्रथम विधानमंडल निर्वाचित हुआ, 1921
1929	–	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्वराज का आह्वान (पूर्ण स्वतंत्रता)
1935	–	गवर्मेंट ऑफ इंडिया एक्ट द्वारा विधानमंडल की शक्तियों में विस्तार और निर्वाचन क्षेत्रों में वृद्धि
1940	–	मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान के निर्माण का आह्वान
1942 और 1946	–	भारतीय स्वतंत्रता के लिए समझौते की शर्तों में असफल केबिनेट मिशन
1947	–	स्वतंत्रता प्राप्ति व भारत का विभाजन पाकिस्तान की स्वतंत्रता

अभ्यास प्रश्न

PSE3NZ

1. हां या नहीं में उत्तर दीजिए –

1. 'हिन्दी केसरी' के सम्पादक बालगंगाधर तिलक थे।
2. राष्ट्रीय एकता की भावना को राष्ट्रवाद कहते हैं।
3. औद्योगिक क्रांति के कारण अधिकांश मिलें खुलीं।
4. भारत के पिछड़ेपन के लिए अँग्रेजों की आर्थिक नीति जिम्मेदार है।
5. शिक्षित मध्यम वर्ग ने आधुनिक विचारों को अस्वीकार किया।

2. खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. गाँधी जी ..... में भारत लौटे।
2. चम्पारण ..... अंचल में है।
3. ..... सत्याग्रह नहर कर के विरोध में था।
4. लगान बंदी के लिए गुजरात के ..... जिले में आंदोलन हुआ।
5. ..... की दीवारों पर गोलियों के निशान आज भी हैं।

3. जोड़ी बनाइए –

1.	1916	–	मुस्लिम लीग की स्थापना
2.	1911	–	बंगाल का विभाजन
3.	1907	–	सर्वदलीय बैठक का आयोजन
4.	1906	–	दिल्ली राजधानी बनी
5.	1905	–	सूरत अधिवेशन

4. इन प्रश्नों के उत्तर में केवल नाम लिखिए –

1. बंगाल विभाजन किया –
2. नरम विचारधारा के प्रमुख नेता –
3. छत्तीसगढ़ में खादी आश्रम बनाया –
4. कवि समाज संगठन कहाँ बना –
5. गदर पार्टी के संस्थापक थे –

5. नीचे कुछ घटनाएँ लिखी गई हैं, आप उससे संबंधित तिथि सन् आदि उसके सामने अंकित कीजिए।

क. 'अँग्रेजों ! भारत छोड़ो' की हुंकार सुनाई पड़ी।
ख. अंततः पाकिस्तान को एक अलग राष्ट्र के रूप में स्वीकार कर लिया।
ग. अँग्रेजों को किसी भी प्रकार से सहयोग नहीं करना चाहिए, यह संकल्प लिया।
घ. एक ऐसी हिंसक घटना हुई जिसके कारण गांधी जी को आंदोलन स्थगित करना पड़ा।
ड. समुद्र तट पर पहुँचकर गांधी जी ने नमक कानून भंग किया।

6. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति किस सदी में हुई ?
2. 28 दिसम्बर 1885 को किस पाठशाला में सभा हुई ?
3. छत्तीसगढ़ में काँग्रेस की शाखा कब बनी ?
4. भारतीय राजनैतिक सभा प्रारंभ में कहाँ हुई थी ?
5. राष्ट्रीय नेता प्रारंभ में किस विचारधारा के थे ?
6. 1900 में छत्तीसगढ़ में प्रकाशित समाचार पत्र का क्या नाम था ?
7. बंगाल प्रांत का विभाजन क्यों किया गया ?
8. राष्ट्रीय विद्यालय/महाविद्यालय क्यों खोले गए ?
9. 'फूट डालो' की नीति का क्या अर्थ है ?
10. स्वदेशी का क्या अर्थ है ?

7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?

क. खेड़ा सत्याग्रह	ख. कंडेल सत्याग्रह
ग अहमदाबाद मिल	घ. खिलाफत आंदोलन
ड. मोपला किसान आंदोलन	च. चौरा–चौरी कांड
छ. प्रतिज्ञा दिवस	ज. जंगल सत्याग्रह
झ. रायपुर षडयंत्र–केस	ञ. धारा 144
ट. 1947 का अधिनियम	ठ. 1919 का अधिनियम

8. इन घटनाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए–

(1) महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश।
(2) रोलेट एक्ट
(3) मकई चौक धमतरी में गाँधी जी
(4) जलियाँवाला बाग हत्याकांड

9. योग्यता विस्तार–

(1) जलियाँवाला बाग के संबंध में सचित्र जानकारी एकत्रित कीजिए।
(2) गांधी जी का छत्तीसगढ़ आगमन के संबंध में सचित्र विवरण संग्रह कीजिए।
(3) अपने क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के बारे में सचित्र जानकारी एकत्रित कीजिए।